बारि मथें घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल।
बिन हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ॥

# नारायण चिन्तन

जिसको

वेदांतकेसरी परमपूज्य श्री १०८ श्री स्वामी चेतनहरिजी
महाराजकी परम शिष्या

पूज्यामाताजी (श्रीनारायणजी) की असीम
कृपा से प्रेमियों के लाभार्थ
प्रकाशित किया



प्रथम संस्करण
३०००

सम्वत् २०३६ मूल्य रु० २/५०

## ❁ समर्पण ❁

भूल न पाऊँ हे करुणाधन, जो उपकार तुम्हारा है ।
तुझको ही समर्पित है गुरुवर, ये दिया प्रसाद तुम्हारा है।

# भूमिका

प्रबुद्ध पाठक वृन्द एवं भगवत् भक्तजन;

भगवत्-कृपा जगत-जलधि से पार करने के लिए सेतु रूप है। प्रभु-कृपा प्राप्ति का सौभाग्य उसीको प्राप्त होता है, जो नित्य निरंतर अनन्य भाव से गोविन्द का चिन्तन करते हैं। प्रभु-चिंतन, उनके गुणानुवादों का गायन, भजन कीर्त्तन जिस भी प्रकार से किया जाय ; यदि भाव भरे हृदय से हो तो श्री हरि तत्काल प्रसन्न हो जाते हैं ।

प्रस्तुत 'नारायण-चिंतन' में भावपूर्ण भजनों का सं[illegible] आपकी सेवा में समर्पित है। इनके श्रद्धापूर्वक पठन-पाठ[illegible] पाठकगण भगवत्-प्रसाद को प्राप्त होंगे। अशुद्धियों को प्रेमी-वृन्द सुधार कर पढ़ें ।

विनीत—

गीता कौशल कुमारी

# भगवान् कहाँ रहते हैं ?

क्व त्वं वससि देवेश मया पृष्टस्तु पार्थिव ।
विष्णुरेवं तदा प्राह मद्भक्तिपरितोषितः ॥

विष्णुरुवाच

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न वै ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥
तेषां पूजादिकं गन्धपुष्पाद्यैः क्रियते नरैः ।
तेन प्रीतिं परां यामि न तथा मत्प्रपूजनात् ॥
मत्पुराणकथां श्रुत्वा मद्भक्तानां च गायनम् ।
निन्दन्ति ये नरा मूढास्ते मद्द्वेष्या भवन्ति हि ॥

नारदजी धर्मराज युधिष्ठिर से कहते हैं—

राजन् ! एक बार भगवान् से पूछा—देवेश्वर ! आप कहाँ निवास करते हैं ? तो भगवान् विष्णु मेरी भक्ति से संतुष्ट होकर इस प्रकार बोले—'नारद ! न तो मैं वैकुण्ठ में निवास करता हूँ और न

योगियों के हृदय में' मेरे भक्त जहाँ मेरा गुणगा
करते हैं, वहीं मैं भी रहता हूँ। यदि मनुष्य गन्
पुष्प आदि के द्वारा मेरे भक्तों का पूजन करते हैं त
उससे मुझे जितनी अधिक प्रसन्नता होती है, उतनी
स्वयं मेरी पूजा करने से भी नहीं होती। जो मूर्ख
मानव मेरी पुराण-कथा और मेरे भक्तों का गान सुन
कर निन्दा करते हैं वे मेरे द्वेष के पात्र हैं।
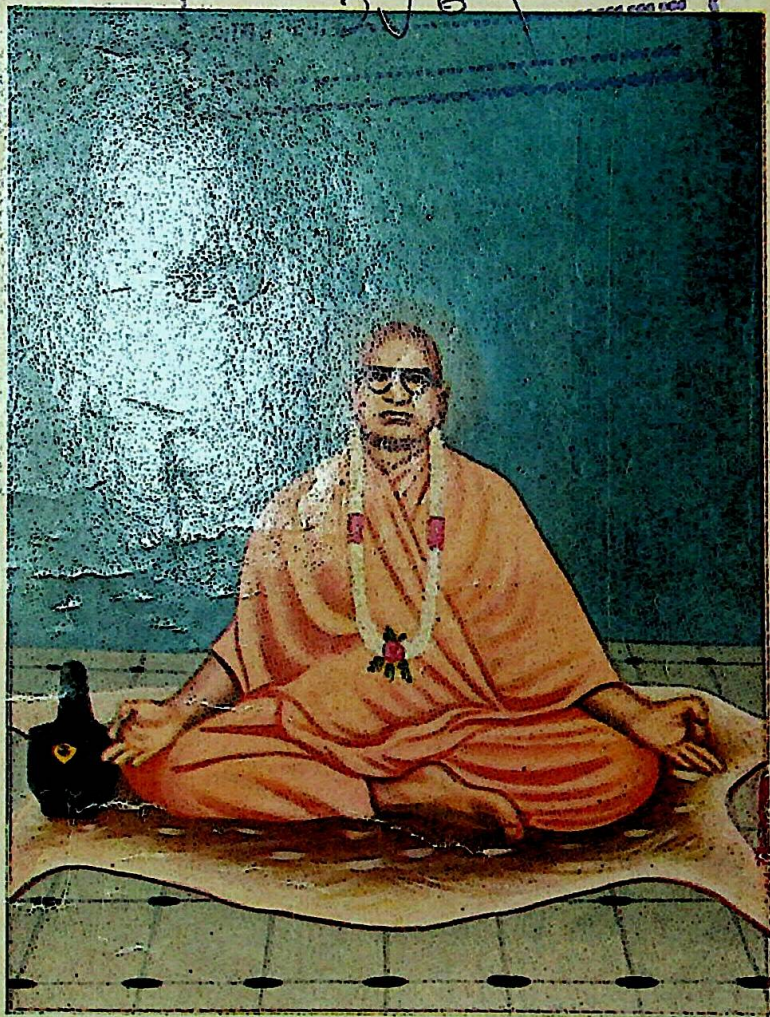
वेदान्तकेशरी श्री श्री १०८ श्री स्वामी चेतनहरिजी महाराज

## ❀ अनुक्रमणिका ❀

| क्रमांक | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|

श्री श्री १०८ श्री स्वामी चेतन हरि जी महाराज की परमशिष्या

श्रीमती नारायणजी ( श्रीमती भगवती देवी )

# नारायण चिन्तन

॥ मङ्गलाचरण ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ब्रह्मानंदं परमसुखदं, केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं, तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ॥
एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वधी साक्षि भूतम् ।
भावातीतं त्रिगुण रहितं, सदगुरु तं नमामि ॥
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥
ब्रह्म प्रणाम प्रणाम गुरु, पुनि प्रणाम सब संत ।
करत मंगलाचरण शुभ, नाशत विघ्न अनन्त ॥
नमस्कार मम है पुनः, ब्रह्म विद्या के ताहिं ।
जाके संग प्रताप ते, ब्रह्म पायो निज माहिं ॥
मति को जो निशिदिन लखै, मति स्यों लख्यौ न जाइ ।

ताहि सच्चिदानन्द को, प्रतिदिन शीश नवाइ ॥
दुख सम्बन्ध से रहित है, नाश कदाचित नाहिं ।
चिद्घन अक्रिय आतमा, नमस्कार मम ताहिं ॥
आतम मंगल रूप है, ताहि न मंगल और ।
भानु रूप परकाश है, नहि दीपक की ठौर ॥

—:०:०:—

## आरती

आरती सद्गुरु देव जी की कीजै ।
गुरु चरणों का ध्यान धरीजै ॥
पार ब्रह्म प्रभु तन धरि आये,
पुण्य जगे ज्ञानी गुरु पाये,
देख—२ छवि मन बहु रीझै ॥
तन मन सौंप गुरु के चरणां,
जो चाहो भवसागर तरणा,
भाव भक्ति से मन भर लीजै ॥
श्री सतगुरु सों नाता जोड़ो,
मान - गुमान सभी को छोड़ो,
लोक लाज सबही तज दीजै ॥

'नारायण' मूर्ति हरिहर की,
बोलनि - चलनि मधुर गुरुवर की,
धोय - धोय चरणामृत पीजै ॥

:ꕥ:ꕥ:ꕥ:

भजन—३

तर्ज—प्यारे प्रभुके श्रीमुख ........

रे मन भजले राधेश्याम, आयेगा जो अन्त में काम,
नाम बिना रे गाफिल मानव, जीवन जायेगा बेकाम ॥
रह जायेंगे महल बगीचे, रह जायेगी मोटर कार,
काया से लपटें निकलेंगीं, खड़ा रहेगा सब परिवार ॥
चेत करले गाफिल प्राणी, नहीं आयेंगे ये कुछ काम ॥१॥
यौवन खोया धन दौलत में, लगा-लगाकर मति तमाम,
सभी जगत के सेठों में भी, बढ़ा लिया अपना श्रीनाम,
श्रीकृष्णको याद किया ना, तो निष्फल सारा आराम ।२।
दिल हिल जायेगा रे प्राणी, जब आए मृत्यु पैगाम,
पहले ही मन हरि से जोड़ो, लगे नहीं अपना कुछ दाम ॥
हँसते-हँसते जाओगे फिर, करके अपना पूरा काम ॥३॥
कहे 'नारायण' लेले प्राणी, स्वामी 'चेतन' गुरुसे निज-ज्ञान,
गुरु कृपा से मिट जायेगा, जन्म - मरण कारण अज्ञान,
आकर गुरु-शरण में करले, अपना सुन्दर मोक्ष काम ॥

—:o:ꕥ:o:—

### भजन—४

है राम सभी का आधार, राम को भूलो ना ॥

घट-घट में एक वो समाया ।
वन बागों में वही लहराया ।
जिसने रचा संसार ॥१॥
जिसने गर्भ में रक्षा की है ।
साथ में सब सामग्री दी है ।
जो सबका पालनहार ॥२॥
धन यौवन पर क्या अकड़ावे ।
साथ तेरे मन कुछ नहीं जावे ।
रहे न तेरा अधिकार ॥३॥
कहे 'नारायण' जाग पियारा ।
राम ही सच्चा रूप तुम्हारा ।
करले उसीसे प्यार ॥४॥

—:०:०:०:—

### भजन—५

तर्ज—प्रभुजी म्हानै राम मिलावो जी

मना तूं कहणो सुन ले रे-२
तूं होसी भव स पार, हरि को सुमिरण करले रे ॥
राम बिन कोई नहीं साथी रे-२

मन जपले दिन और रात, राम थारा सच्चा संगा ॥१॥

चार दिन की दुनियां सारी-२

तूं कर दुनियां से हेत, भूल गये प्यारो बनवारी ॥२॥

राम थारै बैठ्यो घट मांहि-२

अरे भटक-२ कर देख, जगत मे मिलसी सुख नांहि ॥३॥

काम और क्रोध कर ख्वारी-२

तन लूट दिन और रात, हर तेरी सम्पत्ति ही सारी ॥४॥

ज्ञान-गुरु निर्मल मल हारी-२

कहे 'नारायण' तज मोद, जग जा अब तो संसारी ॥५॥

—०—

भजन—६

तर्ज—म्हारी थांरै स लागी प्रीत···

मन भजले हरि को नाम, दुविधा मिट जावै ॥

कोई न थारो र किणसूं हेतकर, थारो साथी है बस राम॥१॥

हंसता-हंसता पक्षी उड़ जाव, जब आवगो पैगाम ॥२॥

दौड़ लगाकर मनवां देखले, नहीं पावगो विश्राम ॥३॥

कहे 'नारायण' र भक्ति कर हरि की,

तन मिलसी हरिको धाम ॥४॥

—०—

## भजन—७

लाग मन आत्म मांहि रे ॥

विषया म सुख नाय मिलेंगो, गुरां बात बताई रे ॥टेक॥

भटकत २ बहु दिन बीते, उमर गंवाई रे ॥

नांहिं जगत म कोई तुम्हारो, क्यूं प्रीत लगाई रे ॥१॥

बोल मधुर मन कर सेवा, हर पीर पराई रे ॥

मर्यां पाछ दोय रह जाव, बुराई भलाई रे ॥२॥

जो उपज्या सोही विनशावं, या रीत पुरानी रे ॥

क्यूं अरमान कर दुनियां म, सब जग फानी रे ॥३॥

हरि भक्ति कर जीवन थोड़ो, श्वासां जावै रे ॥

कहे 'नारायण' राम भजन बिन, मुक्ति न पावै रे ॥४॥

—०—

## भजन—८

तर्ज—आली रे मोहे लागे वृन्दावन...

आली री मोहे गुरू चरण लागें नीके ।

गुरु चरणों में ज्ञान की गंगा, दर्शन होत हरि के ॥१॥

गुरु चरणों में तीरथ सारे, चारों धाम जमीं के ॥२॥

गुरु चंरणों में अमृत-प्याले, मस्त होत मन पीके ॥३॥

गुरु-चरणों में प्रेम को माखन, खावत भाव गही के ।।४।।
गुरु-चरणों में जड़ चेतन सब, पावन होत मही के ।।५।।
कहे 'नारायण' गुरु भक्ति बिन, नर-नारी सब फीके ।।६।।
गुरु चरणों में संकट सारे, कट जाते हैं जी के ।।७।।

—०—

### भजन—६

तर्ज—गुरुदेव दया करिये…

देखो गुरुदेव मेरे न्यारे, भव डूबत जीव सभी तारे ।।
सतगुरु बिन दुख ना मिटते हैं, विपदा के दिन नहीं कटते हैं।।
सतगुरु रोते को हंसाते हैं, सतगुरु हरते हैं दुख सारे ।।१।।
गुरु धोबी बन मन धोते हैं, मन को गहरा रंग देते हैं ।।
बदले में कुछ नहीं लेते हैं, धन भाग गुरु ऐसे म्हारे ।।२।।
और सभी ठुकराते हैं, एक सतगुरु ही अपनाते हैं ।।
सबके भावों को लखते हैं, सब भेदों को मेटनहारे ।।३।।
हे 'नारायण' सतगुरु मेरे, रखिये निज-चरणन के चेरे ।।
जैसे भी है बालक तेरे, इस नैया के खेवनहारे ।।४।।

—०—

भजन—१०

जय श्री गुरुवर जय श्री गुरुवर
जय श्री नारायण, जय श्री नारायण
हे उपकारी, हे दुखहारी, जय श्री नारायण ॥

हे प्राण-प्यारे, नैनों के तारे
तव दर्श से ही दुख जांय सारे
भय ताप हारी, वाणी तुम्हारी
तुम्हारे चरण का मन ये पुजारी ॥१॥

हे तत्त्वदर्शी अज्ञान-हर्त्ता
हे शान्त मूरत हे विश्व कर्त्ता
दीन दुखी को ओट तुम्हारी
आए शरण में तेरे भिखारी ॥२॥

भू-भार हरने अवतार लीन्हा
हम बालकों को आधार दीन्हा
तुमने ही हमको सिखलाया जीना
तुम्हारी दया से निज आप चीना ॥३॥

दास तुम्हारे चरणों में वारी
तेरे सहारे नैया हमारी

तुम पूज्य हो हम तेरे पुजारी
रखना कृपा ये ही विनती हमारी ।।४।।

✲✲✲✲

भजन—११

तर्ज—मंदिर जाती मीरां न······

छोटी सी उमरिया म म्हानै सतगुरु मिल गया जी ।
के म्हारा भाग्य खुल गया जी ।।
सतगुरु म्हानै मिल्या निराला, घट म कर दिया ज्ञान उजाला
जीवन नैया ली सम्हाल, फिकर सारा ही मिट गयाजी ।।१।।
सतगुरु म्हारा आत्म ज्ञानी, उज्वल निर्मल सरल अमानी।
इन गुरुवर के चरणों में, सुख सारा ही मिल गया जी ।२।
प्यारी मनोहर वाणी सुनावें, बिखरे मनों को हरि में लगावें।
ऐसे प्रभु की कृपा दृष्टि से, भय यम का टल गया जी ।३।
स्वामी 'चेतन' सतगुरु का प्यारा,
हे 'नारायण' सुन प्रभु म्हारा ।
चरण-कमल म राखियो, पाप सारा ही छंट गया जी ।।४।।

—:::::::—

## भजन—१२

तर्ज—तन जगत सेठ सब लोग कवै …

हीरे - मोती राम नाम के, देवें सतगुरु दानी रे ।
लूटो २ प्रेम से लूटो, समय सुहानी रे ॥
प्रभुवर के चरणों में दिल से एक बार जो आवे ।
जीवन सरस बने उसका, मन परम निधि को पावे ।
भय दुख मिटे जग चाह घटे, सुन सतगुरु बानी रे ॥१॥

इनके प्यारे दर्शन करके, कली-कली खिल जाती ।
तपते दिलों में गुरु कृपा से; ठंड अनोखी आती ।
भूल गया दुनियां सब यहाँ पर; आकर प्राणी रे ॥२॥

तत्वमसि का बोध करावें, सार वेद का बोलें ।
जन्म-जन्म की लगी ग्रन्थि को, गुरुदेव ही खोलें ।
ये चमकदार जग गुरु कृपा से, लगता फानी रे ॥३॥

प्यारी मधुर छवि प्रभु की मै, निरख - २ सुख पाऊं ।
कलियुग हमें मिले 'नारायण' प्रभु, अपने भाग्य सराहूं ।
मेरे सतगुरू की महिमा भारी, नहीं जाय बखानी रे ॥४॥

## भजन—१३

तर्ज—तन जगत सेठ सब लोग कवै……

बड़े भाग्य मानव तन पायो, सुन ले प्राणी रे ।
भजन प्रभुका करले अबतो, छोड़ नादानी रे ॥
ऐसी अनुपम देन को पाकर, इसको सफल बनाले ।
व्यर्थ जगत की आशा तजकर, उस प्रीतम को पाले ।
जीवन तेरा ढल जायेगा, ज्यूं ओस का पानी रे ॥१॥
कामादिक शत्रु हैं तेरे, नरकों मांहि गिरावें ।
कर विषयों का दास तुझे, चौरासी मांहि फिरावें ।
तज विषयों का मोह मिल गये, सतगुरु ज्ञानी रे ॥२॥
बिगड़ा पिछला काम बनाले, पाया सुन्दर मौका ।
अगर प्रभु का नहीं बना तो, रह जायेगा धोखा ।
अब तो काया नई-२ है, फिर होय पुरानी रे ॥३॥
मोह-माया की नींद हटाकर, सन्त-शरण में आजा ।
कहे 'नारायण' निज को लखकर, 'चेतन' मांहि समाजा ।
मिट जायेगी जन्म-२ की, सब हैरानी रे ॥४॥
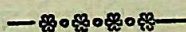
### भजन—१४

तर्ज—सरवरिये क तीर खड़ी……

गुरु चरणों में आनेवाले, धन अमोलक पाते हैं।
दुविधा सारी मिट जाती, और हंसते २ जाते हैं॥
रोते २ आते यहाँ जो, हँसते २ जाते हैं॥टेक॥

दुनियां की बन्दूक तोप से, जग के किले ही ढ़हते हैं।
ममता मोह के भारी गढ़ जो, जरा नहीं वो हिलते हैं॥
दुनियां की किसी फैक्ट्री में, ये हथियार न बनते हैं॥
खड़ग ढ़ाल बिन जय पाना, ये सिर्फ गुरु जी बताते हैं॥१॥

जगह २ हड़तालें होती, मांगें पूरी करने को।
मालिक माँग करेगा पूरी, भज उसे भव तरने को॥
बिन हड़ताल के सब सुख मिलना, जब सतगुरु मिलजाते.हैं।
दीन-भाव मिटाते सारा, शाही रुतबा देते हैं॥२॥

मंजिल से भटके कदम गर, भूल से इधर मुड़ जाते हैं।
सीधी सड़क पा लेते फिर वो, इधर-उधर ना रुकते हैं॥
दानव मन वाले यहाँ पै, मानव बनाये जाते हैं।
कभी न झुकने वाले यहाँ पै, आके खुद झुक जाते हैं॥३॥

स्वामी 'चेतन' सतगुरु जी का दर, शांति का एक खजानाहै।
इसमें क्या है राज भरा, ये गुरुमुख ने ही जाना है ॥
कहे 'नारायण' गुरु चरणों के, जो भ्रमर बन जाते हैं।
जीते जी ही मुक्तिपद का, आनंद वे पा लेते हैं ॥४॥

—:०:—

भजन—१५

तर्ज—मेड़तनी साधां रो संग ··

तू राम भजन न छोड़, लगाले चाहे कितनी दौड़।
जगत थारो नहीं बणै···॥टेक॥
हरि-भक्ति में लाग बावला, के दुनियां म काडै ॥
आतम-घर म रम जा प्यारे, क्यूं विषया म हांडै।
तूं करले गुरु चरणां स प्रीत, थानै सुख, मिल जावै मीत॥
जगत थारो नहीं बणै ॥१॥
जिण खातिर तूं पाप कमावै, हरै परायो माल।
यौवन धन प्रभुता क मद म, देवै सबन गाल ॥
यारी कुण निभासी ओड़, फेर नहीं नरकां म भी ठोर।
जगत थारो नहीं बणै ॥२॥

जिसा बीज बोवै खेती म, वैसो ही निपजावै।
चोखा करम करै तो बीरा, चोखो हो फल पावै॥
तूं करले सबका ही सन्मान, छोड़ कर ममता और अभिमान।
जगत थारो नहीं बणै ॥३॥

भजन कर तूं थोड़ो भाया, मांग बोली चीज।
देख तेरो स्वार्थ की भक्ति, मालिक जावै खीझ॥
चाहे तन कर देवै धनवान, मिल पर आप नहीं भगवान।
जगत थारो नहीं बणै ॥४॥

श्री 'नारायण' हरि मिलण रो, साधन एक बतावैं।
साधां रो संग एक सरल हैं, करतां ही तर जावैं॥
यो ही सतगुरु को उपदेश, चालो चालां अपण देश।
जगत थारो नहीं बणै ॥५॥

—:०:—

भजन—१६

तर्ज—श्री राम राम राम श्री राम कहो…

जय गुरुदेव, जय गुरुदेव, जय गुरुदेव कहो।
जय-जय-गुरुदेव ॥टेक॥

मैं बालक किस मुख गाऊँ, प्रभु तेरी महिमा अपार।
सुर-नर-मुनि कवि सब जन हारे, कोई सके ना उबार॥१॥

श्री गुरुदेव का पूजन ही, सब से बड़ा होता है।
मानव जीवन के पापों का, कलिमल ये धोता है ॥२॥
श्री गुरु-चरणों के समान तीरथ, नहीं कोई जग में।
जो इस तीरथ में आए, गाए खुशी के नगमें ॥३॥
ऐसे गुरुवर की कृपा, कोई गुरु-प्यारा ही पाता है।
उसके लिये दुनियां में कुछ, कठिन नहीं रह जाता है ॥४॥
स्वार्थ प्रीति करने वाले, जग में मिले अनेक।
निस्वार्थ हित करने वाले, सिर्फ गुरु जी एक ॥५॥
ओ उपकारी सतगुरु मेरे, मन भर-भर के आए।
तेरे अहसान ना भूलूं स्वामी, रोम रोम गुण गाए ॥६॥
दुनियां के ताजो तख्त की, सामने तेरे बिसात कहाँ।
लाखों दिलों के शाहंशाह, तेरी शान निराली महा ॥७॥
तेरी उपमा किससे दूँ, तुझसा कहाँ हम पाएं।
तेरे गुण असीम हैं स्वामी, कैसे हम गा पाएं ॥८॥
सोचूँ नयन भरके मैं स्वामी, क्या तव चरणों में चढ़ाऊँ ?
नमस्कार ही बार - बार, हे प्रभु तुमको कर पाऊँ ॥९॥
'श्री नारायण' प्रभु से लाल, कौशल गीता से द्वारपाल।
कितने रूपोंमें 'चेतन' प्रभु ही, करते हमारी सम्हाल।१०।

—:❋❋❋:—

## भजन—१७

### तर्ज—कीर्तन की

आज का दिन है कितना महान, तव चरणन में मम प्रणाम।
हे प्रभु मेरे अति सुखकारी, तुमहीं मेरे बस हितकारी।
गाऊँ मैं तेरे गुणगान, तव चरणन में मम प्रणाम ॥१॥
तुम्हीं दर्शन में तुम्हीं पूजनमें, व्यापक हो प्रभु तुम कण-कणमें।
सुना है मैंने ये कई बार, फिर क्यूं चाहूँ तुम्हें साकार ॥
नहीं जानूँ मैं मति अनजान,
तुम ही बतादो करुणानिधान ॥२॥
मन में तेरा ही ध्यान रहे, निज स्वरूप का ज्ञान रहे।
करूँ मैं तुझ पर ही (बस) अभिमान,
तव चरणन में मम प्रणाम ॥३॥
सदा रहें 'नारायण' मेरे, कृपापात्र हम बने रहें तेरे।
यही करते बालक अरमान, तव चरणन में मम प्रणाम॥४॥
याद करुं जब रूप साकार, मन-भर आता बारम्बार।
भेटूं क्या तुझे करुणानिधान,
मात्र एक बस मूक प्रणाम ॥५॥

—:o:—

भजन—१८

हमारे प्रभु दानी, धन दें दिल खोल।
लूटो-लूटो-लूटो, ये जीवन है अनमोल ॥टेक॥
सतगुरु दयालु दुख हरने वाले।
जीवों के खोलें हृदय-गत ताले।
सत्संग की गंगा में, मोती ही मोती रोल ॥१॥
प्रातःकाल भगवान, वहावें ज्ञान-धारा।
जो नहा लेवे उसका, दुख जाय सारा।
हरि नाम लेने में, लगे ना कुछ मोल ॥२॥
सत्संग से डरना, कभी ना रे भाई।
सत्संग से होती, मन की सफाई।
शांति-भवन में सौदा, मिलता है बिन मोल ॥३॥
मस्ती का प्याला, मिलता यहाँ पर।
माया का जाला, हटता यहाँ पर।
पीले-पीले मनवां, दुनियां में मत डोल ॥४॥
गुरु-दरबार में, आनंद भारी।
चिन्ता-गमी यहाँ मिट जाये सारी।
'नारायण' निकालें, दुनियां की सारी पोल ॥५॥

—:※:—

## भजन—१६

दुनियां में डूबती हुई, नैया निकाल दी।
गुरुदेव ने बिगड़ी हुई, किस्मत संवार दी ॥टेक॥

भटके हुये जीवों को सही मार्ग दिखलाया।
अज्ञान तम मिटाकर, ज्ञान-दीप जलाया।
मंझधार में बहती हुई, पतवार थाम ली ॥१॥

दुनियां का शाहंशाह, सतगुरु ने बना दिया।
तू सच्चिदानंद रूप है, ये भी बता दिया।
दुख दूर कर दिये सभी, विपदायें टाल दी ॥२॥

वीरान जीवन में भी, हरियाली छा गई।
रोते हुए दिलों को भी, हंसी आ गई।
सारे जहाँ की खुशियां, झोली में डाल दी ॥३॥

पाना ना कुछ भी शेष है, जब तुझको पा लिया।
तेरी दया नजर ने ही, भव से बचा लिया।
'नारायण' प्रभु के चरणों में, कुर्बान हम सभी ॥४॥

—:o:—

भजन--२०

तर्ज-मैली चादर

तेरे चरणों में जो सुख है, और कहाँ मैं पाऊँ ?
हे पावन श्री सतगुरु तेरे, चरणों में शीश झुकाऊँ ॥
स्वार्थ की दुनियां में भगवन्, अपना नजर कोई नहीं आया।
जिस २ को भी अपना माना, उससे ही धोखा खाया ॥
देखके जगका अद्भुत ढंग ये, मन ही मन घबराऊँ ॥१॥

जब २ तेरा दर्शन पाती, पुलकित हो जाता तन मन।
तेरी दया से पाया मैंने, खोया था जो अपना अमन।
बार २ कुर्बान हूं तुझपर, तन-मन भेंट चढ़ाऊँ ॥२॥

जिस भी गिरते हुये को तेरे, कर कमलों ने थाम लिया।
कभी न गिरने पाया फिर वो, निज-स्वरूप को जान लिया ॥
धन्य २ है महिमा तेरी, मैं बालक क्या गाऊँ ॥३॥

छोटे २ फूल हैं प्रभु हम, तुम जहान के माली हो।
उसे न कोई चिन्ता जिसके, होते तुम रखवाली हो ॥
श्री 'नारायण' प्रभु हमने पाये, अपने भाग्य सराहूं ॥४॥

—:o:—

## भजन–२१

### तर्ज—घुघरी की

धन्य-धन्य जननी जनम्यो नारायण लाल।
सुत्योड़ा जीव जगा दिया जी गुरुदेव ॥टेक॥

चार कूंट मे कर दीन्ही बहार।
सतगुरु की महिमा वढ़ा दीनी जी गुरुदेव ॥१॥

कस्यो प्रभु जी दीनां पै उपकार।
तन-मन की सुध विसरा दई जी गुरुदेव ॥२॥

धन-धन प्रभु थारो यो अवतार।
डुब्योड़ा जीव उबारिया जी गुरुदेव ॥३॥

के भेंटा प्रभु थानै म्हैं उपहार।
दुनियां मे कोई वस्तु नहीं जी गुरुदेव ॥४॥

थारी कृपा वर्णी न जाय।
दासां रै कारण कष्ट सह्या जी गुरुदेव ॥५॥

सब जन किया आप समान।
महिमा तो वर्णी ना जावै जी गुरुदेव ॥६॥

मोत्यां री वर्षा करो थे अपार।
झोली तो म्हारी भर देई जी गुरुदेव ॥७॥

निर्मल कोमल सरल स्वभाव।
भला ही मना न मोह लिया जी गुरुदेव ॥८॥
धन्य-धन्य स्वामी 'चेतन' सतगुरु-देव।
'नारायण' नाथ मिला दिया जी गुरुदेव ॥६॥
सतगुरु जी थानै भेज्या संगतां मांयं।
भला ही भाग जगा दिया जी गुरुदेव ॥१०

—:❋:—

भजन-२२

आये मन हरषाये सतगुरु, आपके घर आए।
पुण्य जगे कोटि जन्मों के, दर्श आपके पाए ॥
माधुर्य भरा है दर्शन तेरा, रोम-रोम पुलकाए।
तुम्हारी माया में अटका मन, देर से दर्शन पाए ॥
कोमल निर्मल पतित उबारक, ब्रह्म रूप प्रभु पाए।
तेरी शरण है ज्ञान की नौका, जो बैठे तर जाए ॥
धन-धन मेरे सतगुरु दाता, शीतल हृदय बनाए।
सद्-सद् तुमको नमन करे, 'नारायण' बलि जाए ॥

—:०:—

भजन—२३

तेरी अगम महिमा, कोई भेद नहीं पाया ।
ऋषि-मुनियों ने श्रुति कवियों मे, नेति-नेति कर गाया ।टेक
जो कोई तेरे दर पै आता, खाली हाथ न जाता ।
जो तुझको अपना है कहता, उसका तू बन जाता ।
मिटाके खुदी-खुद अर्पित हो तेरे, वो ही तुझको भाया ।१।
युग-युग से चलता है आता, तुझसे एक जो नाता ।
उसको निभाता तू ही केवल, ओ करुणामय त्राता ।
उसे ना कोई चिन्ता जिसके, सिर पै हो तेरा साया ।२।
महा अज्ञान ताले को अनुपम, चाबी दे खुलवाया ।
मन दमन का उपाय सरल प्रभु, करके कृपा बताया ।
तेरी दया मैं कैसे गाऊँ, ना जानूं तेरी माया ॥३॥
अर्चन वन्दन पूजा भक्ति, मैं बालक क्या जानूं ।
दुखभरी दुनियां में केवल, तुझको अपना मानूं ।
तुझसम एक जहाँ में तू ही, नजर है मुझको आया ॥४॥
देह तिलिस्म में छिपे खजाने को, तू ने ही बताया ।
जड़-चेतन का बोध कराके, अपना आप लखाया ।
कण-कण में 'नारायण' दर्शन, प्रभु तुमने ही कराया ॥५॥
तेरी अगम........

::o::o::o::

भजन—२४

ये परम प्रभु मन भाये, हां ये मधुर मूरत मन भाये ।
अमृत-वर्षा नित करते हैं, मुर्दे मन हैं जिलाए ।। टेक ।।

सूखे बाग में छाई हरियाली, पाके तुमसा बसन्त ।
नये-नये नित फूल हैं खिलते, फैली नई सुगन्ध ।
पाकर हो जाते मतवाले, भ्रमर भक्त हरषाये ।।१।।

मन कलियुग के असुरों का, जब बढ़ जाता उत्पात ।
तब-२ दया कर प्रभु हैं आते, मिट जाते संताप ।
दानव को मानव हैं बनाते, निराले प्रभु हैं पाए ।।२।।

भक्तों बिच बैठे प्रभुवर की, शोभा कही न जाय ।
देख-२ तेरी मूरत प्यारी, मन सबके हरषाय ।
गुरु रूप में खुद ही भगवन्, धरा धाम पर आए ।।३।।

'जटिल' शब्द ही खो जाता, जब प्रभु तुम हमें समझाते ।
टकराहट से तव वचनों की, हृदय कपाट हैं खुलते ।
तेरी दया मैं क्या गा पाऊँ, किसी से न गाई जाये ।।४।।

भाव मेरे ऐसे बन जायें, सबमें हैं श्री 'चेतन' ।
मन की वीणा पर बजता रहे, नाम एक 'नारायण' ।
सदा रहे एकदम तन्मयता, तार न टूटने पाए ॥५॥
ये परम प्रभु......

:❀:❀:❀:

भजन—२५

तेरी शरण में जो भी मानव, दिल से आ गया ।
निर्मल जीवन बना है उसका, मैल धुल गया ॥टेक॥

मिटती बेचैनी यहाँ पै, मिलता सच्चा चैन ।
आशाओं के पीछे फिरना, भरते हैं कभी नैन ।
जो कहीं ना-२ मिला हमें वो, यहाँ पै मिल गया ॥१॥

दीन भाव मिटाके प्रभुजी, बनाते शाहन्शाह ।
वाह-वाह में बदल है जाती, दुखित मन की आह ।
मानता है-२ धन्य खुदको, क्या न पा गया ॥२॥

तेरी इक रहमो - नजर ही, जिसपै हो जाती ।
उसका जीवन संवर है जाता, दुनियां बदल जाती ।
उसके जीवन-२ चमन का, हर फूल खिल गया ॥३॥

ऐसे सतगुरु मिलते हैं जब, पुण्य देते साथ ।
पाली जिसने शरण इनकी, रहा न फिर वो अनाथ ।
'नारायण' जो-२ श्रद्धालु हो, वो ही तर गया ॥४॥
तेरी शरण में...

---

भजन—२६

कल्याण करने वाली है, दुनियां में एक प्रभु की शरण ।
शांति देनेवाली है, दुनियां में एक प्रभु की शरण ।
हरि शरणम् हरि शरणम्, हरि शरणम्-२ हरि शरणम्-२ ।टेक
जीवन में जब दुख आते हैं, तब प्रभु को याद करते हैं ।
हर पल गर प्रभु की याद रहे, तो दुख कभी ना पाते हैं ॥
कह गये कबीर ये बात अमोल२,
क्यूं ना माने क्या लगता मोल ४ ।
उलझन मिटानेवाली है, दुनियां में एक प्रभु की
शरण...हरिशरणम् ।
जब कहीं ना राह हम पाते हैं,
तब प्रभु ही राह दिखाते हैं ॥२॥
मरने का भय मिटाते हैं-२, जीना वो सिखला देते हैं-४ ।

बंधन छुड़ानेवाली है, दुनियां में एक···हरि शरणम्॥२॥
जो प्रभु की शरण में आता है,
वो आनंदघन को पाता है-२ ॥३॥
दुख से पीछा छुट जाता है-२,
सच्चा सुख वो पा लेता है-४।
खजाना लुटानेवाली है, दुनियां में एक प्रभु···हरिशरणम्॥
कस्तूरी पाने को मृगया, मारा-मारा फिरता रहता-२॥४
'नारायण' हरि-शरण विना त्यों-२,
'चेतन' का दर्शन नहीं मिलता-४।
सब सुख देनेवाली है, दुनिया में एक प्रभु की शरण···।
हरि शरणम्, हरि शरणम्··· ॥

—:०:०:०:—

भजन—२७ (स्वागत)

आज हृदय में खुशी महान, आये श्री सतगुरु भगवान।
आज भाग्य की करूं बड़ाई, आए मेरे बहन और भाई॥
स्वागत में है तन-मन-प्राण ॥१॥
दूधां स थारा चरण पखारुं, अहो आज मैं क्या-२ करूँ।
आज हुआ है निजानंद मान ॥२॥

सेवा प्रेम हमें सिखलाओ, सद्‌गुण से झोली भर देओ।
तैयार खड़े बालक नादान ॥३॥
स्वामी 'चेतन' ने बाग लगाया, नये-२ फूलों से महकाया।
'नारायण' सब पर कुर्बान ॥४॥

भजन—२८ (स्वागत)

भवन का कण-२ खिला, पधारे आज श्री गुरुदेव।
धन-धन भाग ये अवसर मिला, दर्शन दीन्हे श्रीगुरुदेव॥टेक
स्वागत में तेरे नैन बिछाए, भावों के आसन हैं सजाये।
ले के खड़े श्रद्धा की माला, स्वीकारो मेरे श्री गुरुदेव॥१
तेरी दया मैं कैसे बताऊँ, मन ही मन में अति हरषाऊँ।
पापों का पुंज आज सारा जला, दर्शन दीन्हें श्रीगुरुदेव॥२
आज है जंगम तीर्थ आए, संग त्रिवेणी धारा लाए।
घर बैठे दिया तीर्थ नहा, पधारे ऐसे श्री गुरुदेव ॥३॥
चौरासी का फन्दा हटाया, जीते जी ही मुक्त बनाया।
तोड़ दिया तूने मोह किला, दर्शन दीन्हें श्री गुरुदेव ॥४
तेरा ही तन मन तुझको ही अर्पण, करती रहूं मैं तेरे ही दर्शन॥
ऐसी बतादे कोई कला, दर्शन दीन्हें श्री गुरुदेव ॥ ५॥

'नारायण' तुझपै बलिहारी, तेरी दया का सदा आभारी।
चित, चेतन सब एक किया, दर्शन दीन्हें श्री गुरुदेव ॥६
भवन का कण-कण खिला··· ।

— ✿·✿·✿·✿—

भजन—२६

देख-देख सतगुरु की महिमा, हर्षित तन-मन-प्राण ।
गुरु ने दिया अलौकिक ज्ञान ॥ टेक ॥
जंगम-तीरथ गिरिडिह में आया, अवसर ये गुरु कृपा से पाया।
धरती पर बैकुण्ठ बनाया, ज्ञान भक्ति का जल बरसाया।
करलो कोई स्नान, गुरु ने...॥१॥
ईश्वर ही गुरु बनकर आया, ब्रह्मरूप आत्म दर्शाया ।
छिपा धाम में राम दिखाया, मोह और अज्ञान नशाया ।
धन-२ जानि-जान, गुरु ने...॥२॥
दुखी देखकर सतगुरु ज्ञानी, हो जाते थे पानी-पानी ।
अनुपम थे मेरे सतगुरु दानी, कही न जाय लम्बी है कहानी।
अपनाए नादान, गुरु ने दिया...॥३॥
कहे 'नारायण' गुरु निराले,
छिपी दया से अब भी सम्हाले, हम तो हैं भाई भोले-भाले ।
क्या करें कुर्बान, गुरु ने दिया...॥४॥

✻✻✻✻

भजन—३०

( स्वागत ) तर्ज—तू तो सुमिरण करले ····

तव दर्शन कर मन सुख घना, तुम मात-पिता मेरे बंधु जना।
तेरे नाम बिना, तेरे ध्यान बिना, चैन कहाँ तव ज्ञान बिना।
भटकत हैं सब जीव जगत में,
प्यारी तुम्हारी शरण बिना ॥१॥
आज पुण्य पुरबले सारे खिले, प्यारे दयालु सतगुरुजी मिले।
प्रेम से भींग रहा है तन मन,
मिट गई मन की सब तपना ॥२॥
मोह नींद में सोये थे हम, करुणा कर टेर जगाये तुम।
रात अंधेरी दूर हटाई, जग दर्शाया सब सपना ॥३॥
सर्प रज्जु बिना, सूत वस्त्र बिना,
भूषण तो देखो भला कनक बिना।
तैसे ही भगवन तेरे बिना सब, जगत चराचर है सूना ॥४॥
तुम स्वार्थ विन करो प्रेम घना, और मिटावो सबका रोना।
हे 'नारायण' हम भक्तों पर, हस्त-कमल राखो अपना ॥५॥
तव दर्शन कर...

—:::::::—

### भजन—३१

तर्ज—हे कृष्ण, हे यादव...

मेरे प्रभुवर जग से निराले, खोले हृदय के अज्ञान ताले ।
सारे जगत के हैं ये उजाले, भक्त जनों को सदा ही सम्हाले ॥
हे दाता हे दयालु दयाकर, मेरी झोली में सद्गुण भर ।
शांति देने वाला तेरा दर, झुकता तुम्हारे चरणों में ये सर ॥
हे विश्व व्यापी समता सिखादो,
देह जगत की ममता हटादो ॥
अपमान सहने की क्षमता बढ़ादो,
दुखप्रद सारी अंहता हटादो ॥
अपनी प्रशंसा की चाह गलादो,
भगवन हंकारी मन को जलादो ।
तुम्हारी ही भक्ति का प्याला पिलादो,
मैं सो जाऊँ तो फिर-२ हिलादो ॥
हे 'नारायण' हे जीवन - धन,
आए हमारे लिये धरके नर - तन ।
कभी भूल जाये ना दुनियां में ये मन,
प्रीत मेरी बस रहे एक तुम सन ॥

—०—

भजन—३२

आज पावन समय ऐसा, गुरु कृपा से है पाया ।
भरी दिल में उमंग भारी, समय पूजा का है आया ।टेक।

मेरे गुरुदेव ने आकर, बाग लहरा दिया सारा ।
देखकर देव नर-नारी, सभी का मन है ललचाया ॥१॥

गुरु दरबार में भाई, फूल दैवी गुणों के हैं ।
तोड़कर ले गये जो भी, उन्हीं का जीवन महकाया ॥२॥

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु हैं देव देवेश्वर ।
करो पूजन - करो अर्चन, निराला देव है पाया ॥३॥

गुरु गंगा गुरु जमुना, गुरु हैं तीर्थ तीर्थेश्वर ।
नहालो प्रेम से बहनो, सफल हो जायेगी काया ॥४॥

हुआ पावन भवन सारा, खिला इस देश का कण-कण ।
सफल करदी कुटी ये तो, प्रभु धन-धन तेरी माया ॥५॥

श्री 'नारायण' प्रभुवर ने, रहमत की नजर करदी ।
पिलाया जाम मस्ती का, अनोखा रंग बरसाया ॥६॥
आज पावन समय...

—०—

### भजन—३३

तर्ज—सतगुरु तुम्हारे नाम ने ··

सतगुरु तुम्हारे बाग में, आनंद छा रहा।
ये मन तुम्हारे द्वार पै, विश्राम पा रहा ॥टेक॥
धन्य भाग मेरे जागे, पूजा अनूप आई।
बैठे हैं देव मेरे, मन-मोद हो रहा ॥१॥
यह व्यास-पूजा बहनो, मिल प्रेम से करो।
जीवन का लाभ लूट लो, घर कुंभ आ गया ॥२॥
परदेशी हैं सभी हम, गुरुदेव ने कहा।
स्वदेश जाने को यहाँ पै, वोट खुल रहा ॥३॥
'नारायण' प्रभु दयालु ने, विपदायें सब हरी।
'चेतन' गुरु का लाल, इस जग को जगा रहा ॥४॥
सतगुरु तुम्हारे बाग··· ।

—०—

### भजन—३४

तर्ज—म्हार आया-२ आया···

गुरुपूजा कर लो भाई, यह घड़ी सुहावन आई।
मैं सबन देऊं बधाई, म्हारै घर त्रिवेणी आई॥

श्रद्धा के फूल चढ़ाऊं, मैं आरती मंगल गाऊँ।
तन-मन की ममता भाई, गुरु-गोद में भेंट चढ़ाई ॥१॥
सतगुरु की महिमा भारी, मैं किस-विध गाऊं सारी।
म्हारै खुशियां मन में छाई, म्हें निधि अमोलक पाई ॥२॥
म्हारै घर मे राम दिखाया, रोतां न आय हंसाया।
हृदय की तपन बुझाई, म्हारै ठंडी हवा चलाई ॥३॥
प्रभु 'नारायण' रंग बरसाया, क्वांरां न आ परणाया।
म्हारै सांची मौज बनाई, दूधां की धार बहाई ॥४॥
गुरु पूजा करले॰॰॰।

—:०:—

भजन—३५

तर्ज—भजन बिन मृग न खेत

रतन-गुरु दर्शन दीन्हाजी ॥
खिल गये कमल हृदय के भीतर।
लाग्या है सतगुरु प्यारा ॥
राम मेहर करी सतगुरु जी आये।
कर दिया ज्ञान उजाला जी ॥
इस अवसर के खातिर तड़फे।
ऋषि मुनि जग सारा जी ॥

राम परम दयालु करुणा-सागर ।
करते जीव सुखारा जी ॥
महान पतित भी तारन खातिर ।
मनुज रूप गुरु धारया जी ॥
श्री 'नारायण' की महिमा भारी ।
क्या जाने कोई गंवारा जी ॥
चारों वेद कह-कह हारे ।
अन्त कोई नहीं पारा जी ॥

—:०:❀:०:—

भजन—३६

तर्ज—सुनो री सखी आतम देश......

सुनो री सखी सतगुरु सम नहीं कोई ॥
सतगुरु विन नहीं ज्ञान प्रकाशे ।
ज्यों दिनकर बिन तम नहीं नाशे ।
गुरु - कृपा भव त्रास विनाशे ।
सतगुरु एक सहाई...सुनो री० ॥१॥
मोह निद्रा से आन जगावें ।
जन्म - जन्म की भूल मिटावें ।
दुर्लभ आतम - देव दिखावें ।
सतगुरु हैं सुखदाई ॥ सुनो री० ॥२॥

गुरु - चरणों में सुख है जोई ।
पावे सो मतवाला होई ।
श्री 'नारायण' सांच सुनाई ।
गुरु महिमा वरणी ना जाई ॥ सुनो री० ॥३॥

आत्म - चर्चा हरदम गावें ।
आप जपैं औरों को जपावें ।
अमृत - रस का प्याला पिलावें ।
स्वामी 'चेतन' सुखदाई ॥ सुनो री० ॥४॥

—:o:—

भजन—३७

तर्ज—गंगा न्हाले र ...

न्हाओ-न्हाओ जी, सत्संग की गंगा आई अपणै द्वार ॥
ज्ञान को वोट खुलायो सतगुरु, ले आवो परिवार ।
टिकट प्रेम की कटवा करके, सहजहिं उतरो पार ॥१॥
सच्ची शांति मिले यहाँ पर, बरसे अमृत - धार ।
भाव भक्ति से आओगे तो, मिलें पदारथ चार ॥२॥
जन्म सफल कर राम भजन से, पावो सुख अपार ।
दैवी-गुण अपना करके तुम, रहो सुखी-परिवार ॥३॥

सत्संग के गंगाजल में भाई, जिसने किया स्नान ।
गुरु-कृपा से मस्त हुआ वो, पाकर आतम-ज्ञान ॥४॥
कहें 'नारायण' जो आ जाता, सतगुरु के दरबार ।
सुन्दर जीवन बनता, उसको मिल जाते करतार ॥५॥

—०—

भजन—३८

तर्ज—मानव तन को पाने वाले .....

भगवान कौन से दिल में रहते, जहाँ प्रभु का प्यार ।
यह श्री - मानस का सार ॥ टेक ॥
कथा-प्रभु की सरस लगे, और सुन-२ दिल न अघाता है ।
लोचन चातक हरि दर्शन के, रूप प्रभु मन भाता है ।
तिनके हृदय में श्री रघुनायक, बसें सहित परिवार ॥१॥
जिनकी जिह्वा हंसनिवत् है, हरि-गुण का नित गान करे ।
पट-भूषण-भोजन आदि को, प्रभु अर्पण कर ग्रहण करे ।
नमन करे द्विज गुरु चरणों में, वही दिल हरि का द्वार ।२।
जप-तप-दान करे नित जो, राम भरोसा रखता है ।
राम से अधिक जान गुरुदेव को, प्रेम से सेवा करता है ।
राम बसें उनके हृदय में, जिनके सद् आचार ॥३॥
सबको प्रिय हित चहे सभी का, सुख-दुखादिक सम जाने ।

हित-मित-रित भाषी है जो, पर नारी को माता माने ।
उनका मन हरि का घर जानो, जिसमें कुछ न विकार ।४।
नीति-निपुण गुण गहे सभी के, विप्र धेनु हित कष्ट सहे ।
राम-भगत प्रिय लागें जिनको, सब तज प्रभु की शरण लहे ।
मन-क्रम से हैं दास प्रभु का, बसें वहीं सरकार ।।५।।
सहज प्रेम है एक राम से, और कुछ भी आश नहीं ।
कहें 'नारायण' श्री रघुवर का, निश्चय जानो वास वहीं ।
मन मंदिर को उज्वल करलो, जो चाहो करतार ।।६।।

—ஃஃஃ—

भजन—३६

आया है इस जगमें, प्रभु को पाने के लिये ।
जन्म मिला है तुझको, हरि-गुण गाने के लिये ।।टेक।।
देखके झूठी चमक-चांदनी, ईश्वर को तू भूल गया ।
थोड़ा सा वैभव पाकर बस, उसमें ही तू भूल गया ।
देख तुझे गुरुदेव जगा रहे, समझाने के लिये ।।१।।
कोई किसी का नहीं यहां पर, सब मतलब का जमाना है ।
तोड़ दे सारे झूठे बंधन, गर सुख शांति पाना है ।।
सतगुरु मिल गये जीवन ज्योति, जगाने के लिये ।।२।।

ऐसे स्वर्णिम अवसर सबको, बार-२ नहीं मिलते हैं।
काम बना लेते जो अपना, वो ही हंसते रहते हैं।
कहीं जीवन रह जाये ना, पछताने के लिये ॥३॥
सारी खुदी मिटाकर आजा, गुरुदेव के कदमों में।
सच्चे सुख की अविरल धारा, बहती इनके चरणों में।
अवतीर्ण हुये 'नारायण' प्रभु, दुख मिटाने के लिये ॥४॥
मिला है......

:❀:❀:❀:

भजन—४०

तर्ज– तन जगत सेठ .....

क्यूं दुनियां म मोह कर, या दुनियां जाली रे।
जाग जा सब छोड़ तू तो, जाव खाली रे ॥ टेक ॥
जिनको अपना मान-२ कर, करता प्रेम मिताई।
विपत पड़े पर वे सब प्यारे, करलें :आँख पराई।
स्वार्थ की प्रीति रे मनवां, होती आली रे ॥ १ ॥
मोड़ कर मनोवृत्ति अपनी, ध्यान प्रभु का धरले।

कर नेकी का काम जगत में, जीवन उज्ज्वल करले।
गुरु-चरणों में प्रेम की, पीले प्याली रे ।।२।।
कहे 'नारायण' कर्म सभी कर, फल-इच्छा को तज के।
कर्त्तव्य सभी तू करते जा भाई, नाम प्रभु का भज के।
रहो ईश्वर के बाग में भाई, होकर माली रे ।।

****

# अध्यात्म रामायण

जीवात्मा दशरथ जो कि पंचकोशात्मक शरीर अयोध्यापुरी के अधिपति थे और जीवात्मा दशरथ की तीन रानियां—निवृत्ति रूपी कौशल्या प्रवृत्ति रूपी कैकेयी एवं भक्ति रूपी सुमित्रा। जीवात्मा दशरथ ने सुकर्म शृंगी ऋषि से भगवत् प्राप्ति रूप पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया, जिसके प्रसाद से निवृत्ति रूपी कौशल्या से ज्ञान रूपी राम, प्रवृत्ति रूपी कैकेयी से वैराग्य रूपी भरत भक्ति रूपी सुमित्रा से विवेक तथा विचार रूपी लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न पैदा हुये। फिर विश्वास रूपी विश्वामित्र की भगवत् आराधना यज्ञ में अशुभ विकारादि निशाचर गण विघ्न डाला करते थे। जिससे तंग आकर विश्वास रूपी विश्वामित्र जी ने भगवत आराधना रूपी यज्ञ की रक्षा के निमित्त जीवात्मा दशरथ से ज्ञान राम विवेक—लक्ष्मण की याचना की। पहले तो

जीवात्मा दशरथ ने देने से इन्कार कर दिया परन्तु कुल गुरु विज्ञान रूपी वशिष्ठ जी की आज्ञा से दोनों पुत्रों को उन्हें सौंप दिया। ज्ञान राम, विवेक लक्ष्मण दोनों कुमार सहर्ष उनके साथ चले गये। ज्ञान राम ने वहां जाकर भ्रांति रूपी ताड़का विषय विकार रूपी सुबाहु आदि निशाचरों का वध किया और यज्ञ की रक्षा की और तपरूपी गौतम की नारी स्थिरता रूपी अहिल्या का उद्धार किया इधर निर्गुण जनक ने प्रण किया जो भी देहाभिमानी पिनाक को तोड़ेगा उसे ही शान्ति रूपी सीता मिलेगी। शान्ति, सीता स्वयंबर में आये हुये अज्ञानान्ध मन रावण, मोह बाणासुर देहाभिमान धनुष को तिल भर भी न हटा सके और लज्जित हो निज स्थान को चले गये।

पश्चात् अन्तःकरण के परिणाम स्वरूप दस हजार राजाओं ने मिलकर एक साथ शक्ति लगाई परन्तु वे भी हार मान लज्जित हो रहे। अन्त में ज्ञान राम ने देहाभिमान पिनाक को सहज ही में तोड़ दिया जिसका तत्वमसि रूपी शोर तीनों लोक रूप स्थूल सूक्ष्म कारण

देह में छा गया। देहाभिमान पिनाक के टूटते ही शान्ति सीता ने समता रूपी जयमाला ज्ञान राम के गले में डाल दी। ज्ञान राम को शान्ति सीता वैराग्य भरत को क्षमा माण्डवी, विवेक लक्ष्मण को श्रद्धा उर्मिला और विचार शत्रुघ्न को दया श्रुत कीर्ति विवाही गई। जिस समय देहाभिमान पिनाक टूटा उसका तत्वमसि शोर सुन अविवेक परशुराम जी आये और विवेक लक्ष्मण से बहुतेरा प्रलाप रूप संवाद करते रहे। अन्त में वे परास्त हो गये और ज्ञान राम को ब्रह्म का अवतार समझ भ्रमरूप धनुष दिया जो ज्ञान राम जी का निश्चय हो गया और परशुराम जी बहुतेरी स्तुति कर शून्य वन को चले गये।

॥ इति बालकाण्ड समाप्तः ॥

# अयोध्याकाण्ड प्रारम्भः

जीवात्मा दशरथ ज्ञान राम को मोक्ष पद राज्य देना चाहते थे, परन्तु प्रवृत्ति कैकेयी ने ममता दासी मंथरा की बातों में आकर ज्ञान राम को भवाटवी बन को भेज दिया। उनके साथ शान्ति सीता और विवेक लक्ष्मण वन को चले गये। जीवात्मा दशरथ ने अपसे मंत्री सतोगुण सुमन्त को आज्ञा दी कि शांति सीता सहित दोनों कुमारों को वन दिखाकर चारों अवस्था रूप चार दिन में वापस लौट आना सतोगुण सुमन्त ने शान्ति सीता विवेक लक्ष्मण और ज्ञान राम को धैर्य रूप रथ पर बैठा लिया जिसके शम दम दो चक्के थे और नियम संयम दो घोड़े थे। मुमुक्षु निषादराज के मिल जाने पर ज्ञान राम ने सतोगुण सुमन्त को रथ सहित वापस कर दिया और आप इड़ा पिंगला गंगा यमुना के संगम रूप सुषुम्ना त्रिवेणी में स्नान कर गंगा पार हो गये। रास्ते में सन्तोष तपस्वी

के मिलने से मुमुक्षु निषाद को वापस कर दिया और आप समाधान भारद्वाज ऋषि और समत्व भाव रूप याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों के दर्शन करते हुये सुस्थिर चित्त रूप चित्रकूट में जाकर दृढ़ता रूप पर्णकुटी में रहने लगे।

॥ इति अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

# अरण्यकाण्ड प्रारम्भ

::o::o::o::

तदनन्तर यशरूपी अत्रि ऋषि के आश्रम में गये जिनकी पत्नी शुभ कीर्ति अनसूया ने शान्ति सीता को पति भक्ति स्त्री धर्म की शिक्षा दी। इसके उपरान्त ज्ञान राम ने साधक रूप मुनियों के साधना रूप मनोरथ को सफल करते हुये प्रण रूप गोदावरी के समीप पर्णगृह में कुछ काल निवास किया। एक दिन पंच विषय पंचवटी में तृष्णा शूर्पणखा की दृष्टि ज्ञान राम पर पड़ी तथा उसने अपनी अभिलाषा प्रकट की। ज्ञान राम के संकेत से विवेक लक्ष्मण

ने उसे नाक कान से रहित कर दिया। वह रोती विसूरती क्रोध लोभ दम्भ सहित खरदूषण त्रिशिरादि भ्राताओं के पास गई और नाक कान से हीन होने का वन-वृतान्त कह सुनाया तथा शान्ति सीता का प्रलोभन दिया जिससे उन तीनों ने क्रुद्ध होकर अशुभ विकार आदि सेनाओं के सहित आकर ज्ञान राम को घेर लिया, ज्ञान राम ने शिवोऽहम महा-वाक्य वाणी करके इन सर्व निशाचरों का संहार कर दिया शूर्पणखा ने उनकी विनाश दशा देख मन रावण कपट के पास जा सब समाचार कह सुनाया। मन रावण ने कपट मारीच को साथ ले लिया। कपट मारीच ने अनहोनी कंचन मृग रूप धारण करके ज्ञान राम को आकर्षित किया। ज्ञान राम उसके पीछे चले। और कुछ समय रूप दूरी पर उसे मार गिराया। इधर एकान्त पाकर मन रावण शान्ति सीता को चुरा ले गया और संसार रूप लंका की सत्संग रूप अशोक वाटिका में जाकर रख दिया। विक्षेप रूपी त्रिजटा उसके पास बैठी रहती थी। ज्ञान राम विवेक लक्ष्मण के साथ

वापस आने पर स्थान शान्ति सीता से रहित बहुत दुखी हुये और शान्ति सीता की तलाश में आगे चले तथा मुमुक्षुता रूपी शवरी की झोपड़ी में पहुँच कर उसे कृतार्थ किया। वहां से स्वधर्म पम्पासर में जा उसमें स्नान किया और निर्विकल्प तरू की छाया में जा बैठे। उसी समय शील नारद वहां आये और उन्होंने बहुत प्रकार ज्ञान राम की स्तुति की और ज्ञान राम ने उन्हें अपना स्वरूप पद दे विदा किया।

॥ इति अरण्यकाण्ड समाप्त ॥

# किष्किन्धाकाण्ड प्रारम्भ

—:::::::—

इसके उपरांत ज्ञान राम वहां से आगे चले। सामने स्नेह रूप ऋष्यमूक पर्वत मिला। जहां देहात्मक सुग्रीव ब्रह्मचर्य व्रत हनुमान जी के साथ अज्ञान बाली के भय के कारण रहते थे। ज्ञान राम संशयात्मक सुग्रीव दोनों में शास्त्र प्रमाण साक्षी कर मित्रता हुई जिसने अज्ञान बाली के भय देने का सम्पूर्ण हाल कह सुनाया।

ज्ञान राम ने सप्त भूमिका ( १ शुभेच्छा २ विचारणा, ३ तनुमानसा, ४ सत्वापत्ति, ५ अंसशक्ति, ६ पदार्थ भावनी, ७ तुरिया ) ताड़वृक्ष का छेदन करने के बाद अज्ञान बाली का वध किया। जिसके वध से आसक्ति तारा बहुत बिलाप करने लगी। इसकी विकलता को देख ज्ञान राम ने उसे तत्व निर्णय रूप उपदेश दिया जिससे उसकी व्याकुलता दूर हो गई और वह अपने को कृतार्थ मानने लगी।

॥ इति किष्किन्धा काण्ड समाप्त ॥

# सुन्दरकाण्ड प्रारम्भ

—❀•❀•❀•❀—
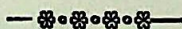
ब्रह्मचर्य व्रत हनुमान जी ने निश्चयात्मक जामवन्त की सलाह से आशा नाम समुद्र को सहज ही पार कर संसार लंका में प्रवेश किया। वहाँ शांति सीता की खबर लगा ली, पश्चात् स्थिरता रूपी मुद्रिका दी। तथा शांति सीता ने भी लगन रूपी चूड़ामणि दी।

उसे लेकर ब्रह्मचर्य व्रत रूपी हनुमान शांति सीता की प्रेरणा से संत्संग रूपी अशोक वाटिका में से दैवी-गुण रूपी फल खाकर अपने तेज के द्वारा संसार लंका को जलाकर समुद्र पार कर वापस जाकर शांति सीता की खबर ज्ञान राम को सुनाई एवं उनकी दी हुई लगन चूड़ामणि दी, जिसे पाकर ज्ञान राम प्रसन्न हुए और साधनादिक बन्दरों की सेना ले आशा समुद्र में उपशम सेतु बाँधकर उस पार उतर गये। सुबोध विभीषण ज्ञान राम से आ मिला।

॥ इति सुन्दर काण्ड समाप्त ॥

# लंका काण्ड प्रारम्भ

—:o:o:—

अब साधनादिक रीछ वानर सहित ज्ञान राम ने धावा किया अर्थात् युद्ध शुरू कर दिया। मन रूपी रावण की सेना का संहार होने लगा। फिर काम रूपी मेघनाद की बारी आई। इधर विवेक रूपी लक्ष्मण तथा कामरूपी मेघनाद दोनों लड़ने लगे।

काम मेघनाद की शक्ति से विवेक लक्ष्मण मूर्छित होकर गिर पड़े। जिनको ब्रह्मचर्य व्रत हनुमान जी ने सत्यव्रत संजीवनी लाकर चैतन्य किया, पश्चात् विवेक लक्ष्मण ने अपने वस्तु विचार रूप हथियार से काम मेघनाद का संहार किया। पश्चात् सुमति मन्दोदरी ने मन रावण को बलोन्मदमत्त कुम्भकर्ण के मरने के बाद बहुतेरा समझाया, परन्तु वह हठधर्मी दशकंधर ( दसों इंद्रियों द्वारा विषय रूपी मुखवाला तथा दसों दिशाओं में गमन भूत रूप ) ने उसके अनुरोध पर कुछ ध्यान नहीं दिया। अंत में वह मारा गया। उसकी हस्ती मिटाना ही उसका नाश होना है। फिर सुबोध विभीषण को संसार लंका का निर्भय पद अभेद रूप राज्य दे दिया।

॥ इति लंकाकाण्ड समाप्त ॥

# उत्तरकाण्ड प्रारम्भ

—:०:०:*:०:०:—

ज्ञान राम शांति सीता विवेक लक्ष्मण तथा साधनादिक बानरों के साथ अनुराग पुष्पक विमान पर सवार होकर पंचकोशात्मक अयोध्यापुरी में आये। वैराग्य भरत को गले लगाया तथा इन्द्रादिक इन्द्रियादिकों के देवता रूप पुरवासियों से मिले और उनका शोक दूर दिया। अतः अविचल तुरीयातीत पद रूप अखण्ड राज्य सिंहासन पर बैठे।

॥ इति उत्तरकाण्ड समाप्त ॥

इति श्री सूक्ष्मरूपेण अध्यात्म रामायण श्री महर्षि जी महाराज विरचित समाप्त॥

—:*:—

# जीव परदेशी

क्यूँ बना भिखारी भटकत द्वारे द्वार रे परदेशी।
तूँ जगत पिता का प्यारा राजकुमार रे परदेशी॥

( १ )

पड़ी एक दिन दृष्टि तुम्हारी,
जग के ताने-बाने पर।
मचल पड़ा तत्काल पिता से,
तुला जगत में आने पर॥
कहा पिता ने उलझ जायगा,
जगत जाल ठग जाने पर।
तजा न तूं निज हठ प्रभु के,
बार बार समझाने पर॥
तब रूचि राखन हित हुए,
पिता लाचार रे परदेशी॥

( २ )

ज्ञान सचिव के संग पढाया,
बहुत भांति समझा करके।

आओ सकुशल शीघ्र कुंवर को,
लीला जगत दिखा करके ॥
सावधान अटकन भटकन से,
रखना इसे बचा करके ।
कहा तुम्हें भी करना कुछ,
मन्त्री से अनुमति पा करके ।
फिर सचिव संग तू आया,
बीच बाजार रे परदेशी ॥

( ३ )

मिले मार्ग में पाँच परस्पर,
मिल जुल कर बतलाय रहे ।
देख तुम्हारी ओर तेरे उर,
उत्कंठा उपजाय रहे ॥
कहा सचिव ने देख देख क्यों,
इन्हें कुँवर ललचाय रहे ।
तुम्हें फँसावन हेतु दुष्ट ये,
माया जाल बिछाय रहे ॥
बच रहना इनसे हितकर,
यही विचार रे परदेशी ॥

( ४ )

अन्तर्मुख तू हुआ बात,
मंत्री की हितकर सुन करके।
भेजा उन पाँचों ने बुद्धि को,
प्रतिनिधि अपना चुन करके।
कहे बुद्धि सुन कुँवर बात,
फिर यह निर्णय मन गुन करके॥
किया निवारण पुनः मंत्री ने,
बुद्धि गई जल-भुन करके।
कहा जाय सब यत्न हुआ,
बेकार रे परदेशी॥

( ५ )

आये पांचो स्वयं-यत्न संयुक्त,
पुनः एक बार करे।
बोले तुझसे शरणागत की,
विनति को स्वीकार करे।
दे मंत्री का दान हमें,
निज दिव्य सुयश विस्तार करे।

सुख पूर्वक फिर संग हमारे।
गुण में सदा विहार करे।
सुन हुआ तेरे मन माया का।
संचार रे परदेशी ॥

( ६ )

कहा सचिव ने पुनः अगर।
तुम इन्हें तनिक भी जोवोगे।
हो नितान्त भोले भाले।
छलियों से प्रभावित होवोगे।
फंस माया के जाल लाल निज।
सहज सिद्ध सुख खोवोगे।
अटक भटक दुर्गम भव पथ में।
सिर पटक पटक कर रोवोगे।
फिर भव बन्धन से मुक्ति होय।
दुस्वार रे परदेशी ॥

( ७ )

मानी नहीं बात मंत्री की।
कर बैठा मनमानी जी।

सुन तो लेने दो इनकी ।
फिर अपनी राय सुनाना जी ।
सचिव मौन तुम पूछा उन ।
पांचो का पता ठिकाना जी ।
हो तुम कौन कौन गुण तुममें ।
अलग - अलग बतलाना जी ।
वे वर्णन करने लगे सहित ।
विस्तार रे परदेशी ॥

( ८ )

पहला बोला नाम हमारा ।
है अनन्त आकाश प्रभो ।
मुझे बना लो मित्र रहूं मैं ।
सेवक सहित सहवास प्रभो ।
मन बहलाया करूँ तुम्हारा ।
कर संगीत प्रकाश प्रभो ।
नाना विधि स्वर तान मधुरही ।
है जीवन सुखरास प्रभो ।
अति आनन्द हो सुनकर शब्द ।
झंकार रे परदेशी ॥

( ९ )

कहा दूसरे ने सुनिये ।
वायु हमारा नाम प्रभो ।
सेवक मेरा त्वचा और है ।
गुण स्पर्श का लाभ प्रभो ।
मुझे बना लो मित्र रहूँ मैं ।
सेवक सहित गुलाम प्रभो ।
पावो शीतल कोमल सुखद ।
स्पर्श हृदय अभिराम प्रभो ।
हो आलिंगन सिहरन से ।
आनन्द अपार रे परदेशी ॥

( १० )

कहा तीसरे ने सुनिये ।
अग्नि हमारा नाम प्रभो ।
सेवक सुन्दर नेत्र मेरा ।
और रूप विषय का लाभ प्रभो ।
मुझे बनालो मित्र रहूँ मैं ।
सेवक सहित तव दास प्रभो ।

रंग विरंगे रूप देख कर ।
होवोगे उल्लास प्रभो ।
बिना मेरे है जीवन ये ।
बेकार रे परदेशी ॥

( ११ )

चौथा बोला सुनिये स्वामी ।
मैं तो जल कहलाता हूँ ।
सेवक मेरा रसना है ।
रस स्वाद अनेक चखाता हूँ ।
खट्टा मीठा कड़वा फीका ।
षटरस का ज्ञान कराता हूँ ।
देखो मुझसे मैत्री कर मैं ।
कैसा सुख पहुँचाता हूँ ।
विना हमारे जग सुख सकल ।
असार रे परदेशी ॥

( १२ )

पंचम बोला मैं हूं पृथ्वी ।
गुण है गंध हमारा जी ।

सेवक मम नासिका तुम्हारे ।
भरे मोद मन भारा जी ।
इत्र फुलेल चमेली बेली ।
जुही गुलाब अपारा जी ।
यों शब्द, स्पर्श, रूप रस गंध संग ।
सुख अमित अपारा जी ।
इन पंच गुणों के हम ही पंच ।
आधार रे परदेशी ॥

( १३ )

सुन पांचों से मोह माया की ।
बातों से तू भरमाय गया ।
हो नितान्त भोले-भाले मैत्री ।
करने को ललचाय गया ।
फंसता देख तुम्हें मंत्री एक बार ।
पुनः समझाय गया ।
लेकिन अब तो तेरे मन ।
अहंकार भयंकर छाय गया ।
तू ने शील त्याग मंत्री को ।
दिया फटकार रे परदेशी ॥

( १४ )

सचिव माश्र हो मंत्री मुझ पर।
शासन का अधिकार नहीं।
जो जो आज्ञा करो सभी को।
करता मैं स्वीकार नहीं।
इतने अंकुश में रआ।
जाता है राजकुमार नहीं।
नहीं मुझे परवाह अगर तुम।
जावो अभी पधार कहीं।
अपमानित मंत्री चला गया।
मन मार रे परदेशी॥

( १५ )

कर पांचो से मैत्री तू।
अपने स्वरूप को भूल पड़ा।
मस्तक नीचे चरण ऊपर कर।
गर्भवास में झूल पड़ा।
आधि-व्याधि और जरा मृत्यु का।
पुनः पुनः सहना शूल पड़ा।

चला कमाने ब्याज किन्तु।
लालच वश खोना मूल पड़ा।
अब विविध योनि में जन्मत।
बारम्बार रे परदेशी ॥

( १६ )

आकर चारि लाख चौरासी।
भटक-भटक नर तन पाया।
साधन धाम देव दुर्लभ-तन।
वेद पुराणों ने गाया।
मात पुनि गंगा गीता।
रामायण श्रुति की छाया।
दुर्लभ साधन सकल सुलभ।
श्री हरि की हेतु रहित दाया।
अब नारायण प्रभु सुमर हो।
भव से पार रे परदेशी ॥

सुना चुका हूँ हेतु बंध का ब्योरा वार रे परदेशी ॥
अब सुन उपाय जिससे हो भव से पार रे परदेशी ॥

( १७ )

यदि धरा धन धाम नारि सुत ।
मित्रादिक सुख खूब रहा ।
फिर भी काल कर्म वश तू ।
चिन्ता समुद्र में डूब रहा ।
आधि व्याधि परिवार कलह ।
त्रयताप आदि से दुःखी रहा ।
फिर भी दुर्वासना भूमि में ।
मन तेरा यह घूम रहा ।
फिर नित सहना कामादिक का ।
निठुर प्रहार रे परदेशी ॥

( १८ )

मिला एक अलमस्त एक दिन ।
तुम्हें भटकते राह कहीं ।
देह गेह परिवार आदि से ।
विरति जिसे कुछ चाह नहीं ।
शत्रु मित्र सुख दुःखादिक ।
द्वन्दों की कुछ परवाह नहीं ।

मुख प्रसन्न तन पुष्ट हृदय ।
आनन्द सिन्धु की चाह नहीं ।
उससे हुआ कुछ कम तेरा ।
दुःख भार रे परदेशी ॥

( १८ )

पूछा उसने निकट जाय ।
भैया एक बात सुनो मेरी ।
तुम्हरे दर्शन मात्र से मिल गई ।
मुझे सांत्वना की ढेरी ।
जग सुख साधन रहित लगा मैं ।
देख चुका सब तन हेरी ।
फिर भी कैसे तुम सुखी शान्त ।
स्वच्छन्द करो जग में फेरी ।
मैं सब साधन सम्पन्न ।
तदपि हूँ बे जार रे परदेशी ॥

( २० )

बोला तब अलमस्त सुनो मैं ।
वीतराग कहलाता हूं ।

सुखी शान्त इसलिये कि ।
मन को कहीं नहीं अटकाता हूं ।
जग के भूल भुलैया में मैं ।
यदि कदाचित जाता हूं ।
ले सहाय सन्तोष भ्रात की ।
बार-बार बच जाता हूं ।
तू हुआ दुखी कर पंच ।
विषय से प्यार रे परदेशी ॥

( २१ )

पुनि उसने लखि आग्रह तेरा ।
किया याद निज भाई को ।
पहुंच गया सन्तोष तुरत ही ।
करने तेरी मनचाही को ।
मिली तसल्ली और तुझे लखि ।
उस महान सुखदाई को ।
सम्मानित हो तुझसे बोला ।
हितकर गिरा सुहाई को ।
मैं वीतराग अग्रज सन्तोष ।
उदार रे परदेशी ॥

( २२ )

दैव योग से जो मिल जाये ।
उससे काम चला लूं मैं ।
नहीं और की चाह थाह ।
भवसिन्धु अगम की पालूं मैं ।
रहूँ सदा निर्द्वन्द जगत से ।
बैठा हरिगुण गालूं मैं ।
इसी तरह रहूँ मस्त निरन्तर ।
अपना आप सम्हालूं मैं ।
तू सुख चाहे तो यहि वृत्ति ।
उर धार रे परदेशी ॥

( २३ )

भैया तुम दोनों के दर्शन से ।
मुझे बड़ी ही शान्ति मिली ।
वचन सुधा सिंचन पा हिय की ।
मुरझाई सी कली खिली ।
जन्म जन्म की दुष्ट वासना ।
आधि व्याधि की नींव हिली ।

अब दर्श कराय ज्ञान का मुझको ।
ले चलो अपनी ही गली ।
मैं भूलूं नहीं तुम्हारा यह ।
उपकार रे परदेशी ॥

( २४ )

लखि दोनों ने रुख तेरा ।
पुनः उसी समय ज्ञान टेरे ।
वही ज्ञान जो सचिव रूप में ।
प्रथम दिया प्रभु संग तेरे ।
आया ज्ञान कहो भाई ये ।
कौन खड़ा तुम्हारे नेरे ।
कहो क्यों याद किया मुझको ।
क्या लायक है आज्ञा मेरे ।
मैं करूं तुम्हारी क्या सेवा ।
सत्कार रे परदेशी ॥

( २५ )

कहा उन्होंने यही तुम्हारे ।
दर्शन के अभिलाषी हैं ।

५

बोला ज्ञान नहीं भैया ये ।
हमसे बहुत उदासी हैं ।
ठोकर मार भगाया मुझको ।
ऐसे विषय उपासी हैं ।
कहो प्रभु कुछ याद है क्या ।
हम कौन देश के वासी हैं ।
अब तू भूला निज सहज स्वरूप ।
संभार रे परदेशी ॥

( २६ )

ईश्वर अंश शुद्ध सत चेतन ।
अनूप अमल अज अविनाशी ।
क्षुधा पिपासा जरा मरण दुख ।
रहित सहज ही सुखरासी ।
बन्धन रहित असीम शक्ति ।
सम्पन्न दिव्य गुणों का परकासी ।
मोह ग्रस्त हो अहंकार वश ।
आय पड़ा यम की फांसी ।
मनमानी करके खोया निज ।
अधिकार रे परदेशी ॥

( २७ )

सुन मंत्री की बात पिता की ।
याद सहज ही हो आई ।
हानि ग्लानि मानी मन में ।
आंखें दोनों जल भर लाई ।
क्षमा क्षमा कहि गिरा चरण में ।
तन मन की सुधि विसराई ।
यद्यपि क्षमा के योग्य नहीं मैं ।
महा नीच हूं अन्यायी ।
अब बार बार अपने को ।
रहा धिक्कार रे परदेशी ॥

( २८ )

आश्वासन दे मंत्री बोला ।
अब ग्लानिका कोई काम नहीं ।
जितने चिन्तित इधर आप ।
उससे कम चिन्तित राम नहीं ।
प्रभु से अलग स्वतंत्र जीव का ।
निश्चित और मुकाम नहीं ।

पुनः आपको गोद लिये बिन ।
प्रभु को भी विश्राम नहीं ।
इसलिये खड़े प्रभु लम्बी भुजा ।
पंसार रे परदेशी ॥

( २६ )

हर प्राणी के जीवन में ये ।
सभी सुअवसर आते हैं ।
किन्तु कोई विरले ही ।
अवसर का लाभ उठाते हैं ।
अन्य अभागे लोग कृपा को ।
जान बूझ ठुकराते हैं ।
फल स्वरूप सुख की आशा में ।
दुःख पर दुःख ही पाते हैं ।
फिर दोष धरे प्रभु ऊपर ।
मूढ़ गंवार रे परदेशी ॥

( ३० )

बच पाता वैरागी जग से ।
ले सन्तोष सहारे को ।

सुभ्क भक्ति की शक्ति धात्री ।
हरि आश्रित बेचारे को ।
हम तीनों और भक्ति जननी ।
प्राण प्रिय प्रभु प्यारे को ।
पहुँचाते निज धाम और ।
वे हर लेते दुख सारे को ।
यह भक्ति सकल सुख की ।
अक्षय भंडार रे परदेशी ॥ अब सुन ॥

( ३१ )

पांच भूत और पांच विषय ये ।
पंच भये भव कारण जी ।
वैराग्य ज्ञान सन्तोष भक्ति भगवन्त ।
पंच भये भव तारण जी ।
हो दिव्य पंच मित्रों से भौतिक ।
पंच प्रपंच निवारण जी ।
अन्यथा असम्भव भव बन्धन से ।
मुक्ति प्रयत्न हजारण जी ।
यह श्रुति पुराण सन्तों ने किया ।
निर्धार रे परदेशी ॥

( ३२ )

बिगड़ी बात बने अब भी यदि ।
बात हमारी मानो तो ।
वर विराग सन्तोष ज्ञान और ।
भक्ति भाव उर आनो तो ।
पंच विषय तजि मन इन्द्रिय से ।
प्रभु की सेवा ठानो तो ।
नारायण घट घट व्यापक ।
अर्न्तयामी को पहचानो तो ।
अब तो अटकन भटकन का ।
उपसंहार रे परदेशी ॥

—::::::—

# एक महात्मा का प्रसाद

✻✻✻✻

यदि आप लोग शीघ्रताशीघ्र परम शान्ति चाहते हैं तो निम्नलिखित शिक्षा ग्रहण करें। वास्तव में परम शान्ति परमपद परमगति परमधाम आत्मा परमात्मा राम निज स्वरुप होने से आपके पास अति समीप से समीप है। इतना समीप है जितना आपका मन भी आपके समीप नहीं है, अर्थात् राम आपके रोम-रोम में व्याप्त है, किसी अन्य स्थान पर नहीं बैठा हुआ है।

(१) सकल संसार में नारायण राम की भावना करें। किसी भी प्राणी को मन, वाणी शरीर द्वारा दुःख न दें; बल्कि सम्भव हो तो सुख ही देना चाहिए। इस संसार में एक ही पुण्य है, एक ही पाप है, एक ही धर्म है, और एक ही अधर्म है। और वह है :—

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्॥

भावार्थ—भगवान् व्यासजी का कहना है कि दूसरे को सुख देने के समान तो कोई पुण्य नहीं है और दुःख देने के समान पाप नहीं है।

परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीरा सम नहिं अधमाई।
नर शरीर धरिजे पर पीरा, करहिं ते सहहिं महा भवभीरा॥

भावार्थः—दूसरे को सुख देने के समान धर्म नहीं है और दुख देने के समान अधर्म नहीं है।

(२) कोई आपको दुःख दे तो उस पर क्रोध नहीं करना चाहिए, बल्कि समझना चाहिये कि मेरे अपने किये हुए कर्म ही मुझे दुःख दे रहे हैं। दूसरा कोई किसी को दुःख नहीं देता है।

बोले लखन मधुर मृदुवानी, ग्यान विराग भगति रससानी
काहुन कोइ सुख दुख करदाता, निज कृत कर्म भोग सबभ्राता

भावार्थः—जब निषादराज ने भगवान् राम को वन में कष्ट पाते हुए देखा तो वे माता कैकेई को बुरा भला कहने लगे। ऐसे अवसर पर श्री लक्ष्मण जी ने ज्ञान वैराग्य एवं भक्ति से सनी हुई यह बात कही कि हे भाई! माता कैकेई का दोष नहीं है, यह तो अपने पूर्वकृत कर्मों का ही दोष है।

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपिदाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्म सूत्रैग्रं थितोहिलोकः॥

भावार्थ :—सुख और दुःख कोई दूसरा नहीं देता है। यह तो जीवों के अपने अच्छे बुरे कर्मों का फल ही सुख दुख के रूप में उन्हें प्राप्त होता है। मुझे दूसरा सुख-दुख देता है, ऐसा सोचने वाला खोटी बुद्धि वाला है, एवं इसी लिये दुःखी होता है। अतः दुख-सुख के लिये किसी को दोष नहीं देना चाहिये।

(३) किसी के द्वारा कटु वचन बोलने पर अथवा क्रोधित होने पर बदले में अपने को उस पर क्रोध न करके उसे क्षमा ही करना चाहिये। इससे बढ़कर कोई अन्य पुण्य कार्य नहीं है।

(४) छल, कपट, चोरी आदि का व्यवहार कभी न करें और झूठ कभी न बोलें।

(५) सदा बड़ों की आज्ञा का पालन करें।

(६) कभी किसी की निन्दा (चुगली) न करें।

(७) न तो अपने घर परिवार वालों की निन्दा किसी से करें और न दूसरे की निन्दा सुनें। किसी प्रकार की निन्दा करने या सुनने वाले आपके हितकारी नहीं हैं।

(८) बिना प्रयोजन के कहीं आना जाना, कुछ देखना-सुनना, बोलना-चालना आदि कार्य न करें।

(९) सदा प्रेमपूर्वक मीठी वाणी में ही बोलें।

(१०) संसार को मिथ्या ( झूठ ) जानकर इसके लिए हर्ष-शोक नहीं करना चाहिये।

(११) जो कुछ भगवान् दें, उसी पर सन्तोष करना चाहिये एवं भगवान् को उसके लिए धन्यवाद देना चाहिये।

(१२) सांसारिक सभी काम निष्काम भाव से करें। सकाम भाव से न करें, सकाम भावसे कार्य करने से जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा नहीं मिल सकता।

(१३) अपने परिवारिक कामों को भी निष्काम भाव से ही करें, मान-बड़ाई-प्रतिष्ठा की इच्छा से कभी न करें। घरेलू कामों में मितव्ययिता ( कम खर्ची ) बरतनी चाहिये। फिज़ूल-खर्ची अशान्ति देने वाली तथा विनाश करनेवाली होती है।

(१४) स्त्रियों को चाहिये कि वे सदा अपने पतिव्रत धर्म पर दृढ़ रहें। कभी किसी पर-पुरुष पर कुदृष्टि नहीं डालें।

पुरुषों को भी किसी पराई बहू बेटियों पर कुदृष्टि नहीं डालनी चाहिये। सदा अपने मन को वश में रखना चाहिये।

(१५) सास को चाहिये कि अपनी पुत्रवधुओं को पुत्री से भी अधिक प्रेम करें एवं बहुओं को चाहिये कि सास को अपनी माता से बढ़ कर मानें। ननदों को अपनी भौजाइयों से प्रेम का बर्ताव करना चाहिये। न कि वैर विरोध का।

(१६) परस्पर गोतनियों ( देवरानी जेठानी ) को बड़े प्रेम से रहना चाहिये। झूठे नाशवान् पदार्थों के लिए लड़ाई-झगड़ा नहीं करना चाहिये। अपनी-अपनी लड़कियों को दहेज कम-वेश देने के लिये विवाद न करते हुए जो कुछ घर के मुखिया करें उसीमें सन्तोष करना चाहिये।

(१७) हर समय भगवान् से यही प्रार्थना करनी चाहिये कि हे भगवन् ! हमें सुमति दो तथा कुमति दूर करके हमें अपने चरणों की प्रीति का वरदान दो।

(१८) दोनों समय भगवान् की आरती उतार कर ही भोजन करना चाहिये। बिना आरती उतारे अन्न-जल ग्रहण नहीं करना चाहिये।

(१९) सभी विवेकी समाज के बन्धुओं को चाहिये कि कोई पुत्रवधू या अन्य स्त्री कभी विधवा हो जाये और वह अपने धर्म पर स्थिर रहे तो सास, ससुर को उसे मन, वाणी, शरीर से किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहिये, अपितु उसे भगवान् स्वरुप या तपस्विनी जानकर सुख देना चाहिये। यदि इस प्रकार हम लोग नहीं करते हैं और उसे कष्ट देते हैं तो वह भगवान् को कष्ट देने के समान ही होता है। और कष्ट देनेवाले के सभी किये हुए धर्म-कर्म निष्फल हो जाते हैं। इसलिए हम सभों को सभी शुभ कर्मों में उसे निरादर की जगह उचित स्थान देना चाहिये।

यदि परम शान्ति चाहते हैं तो आज से नाशवान् और महान् दुःख रुप संसार सुखों की इच्छा भूल कर भी नहीं करनी चाहिये। यदि करोगे तो स्वप्न में भी शान्ति नहीं प्राप्त होगी। सांसारिक सुखों की इच्छा करना उल्टा दुःखों को बुलाना है।

अगर उपरोक्त उपदेशों को सभी बहिन भाई अपने व्यवहार में लावेंगे तो सांसारिक जीवन श्रेष्ठ एवं शान्तिमय होने के साथ-साथ पारलौकिक कल्याण का साधन अवश्य बन जायगा।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

## श्री १०८ स्वामी गुराँदत्तामलजी महाराज की अनमोल शिक्षायें

—❀०❀०❀०❀—

१—शिक्षा, उपदेश मंत्र स्वास स्वास जपना गाफिल न होना।

२—शिक्षा, जो बात मन में होवे जबानी सच सच बोला करो।

३—शिक्षा, हक हलाल की कमाई करके खाओ दूसरे का हक मुर्दे समान जानो।

४—शिक्षा, जो परमेश्वर देवे धन्यवाद पूर्वक सन्तोष के साथ गुजारा करो।

५—शिक्षा, जो दर पर भूखा-प्यासा आवे यथाशक्ति सेवा करदो।

६—शिक्षा, जो कोई तुमको बुरा-भला वचन कहे क्षमा करो, उसके उत्तर में कटु वचन न बोलो।

७—शिक्षा, तुम सबसे मीठी वाणी जी करके बोलो फीका कड़ुवा न बोलो।

८—शिक्षा, संसार बादल की छायावत् झूठा है हर्ष शोक नहीं करना।

९—शिक्षा, चोरी जारी मांस शराब जूआ और तम्बाखू खाने-पीने की सख्त रुकावट है।

१०—शिक्षा, सर्व संसार में नारायण भावना करो बुरा किसी का न करो अपने ब्रह्मचर्य में स्थिर रहो।

११—शिक्षा, पराई वस्तु निन्दा चुगली ईर्षा वाले स्वभाव का त्याग करो।

१२—शिक्षा, बिना मतलब न बोलो न सुनो न देखो न चलो, मन इन्द्रियों को काबूं में रक्खो।

१३—शिक्षा, जो दुख आ पड़े अपना कर्म भोग जानो दोष किसी को न दो।

१४—शिक्षा, स्त्री जाति अपने पतिव्रत धर्म में स्थिर रहे किसी पर पुरुष से खोटी दृष्टि न करे।

उत्तम क्षिक्षा मनन करीजें। मन अपने को शुद्ध कर लीजे।
तां से होवे ब्रह्म ग्यान। जन्म मरन की होवे हान।

—०००—

# प्रार्थना

करो दया ऐसी हे भगवन जीवन् में सद्गुण आवें।
भक्ति ज्ञान से भूषित हो मानव तन सफल बना पावें॥
देख जगत की सुन्दरता यह मन मेरा नहीं अटकावे।
शब्दादि विषयों की गली में बुद्धि कभी ना भटकावे॥
आसन एक तुम्हारा होवे मन मन्दिर में हे दाता।
भाई बन्धु कुटुम्ब सब मेरा तू ही पिता तू ही माता॥
कोई निन्दा करे जगत में सुनकर मन नहीं घबरावे।
सदा रहूँ निर्द्वंद्व जगत यह परमात्म मय दर्शावे॥
देख दुखी रोगी प्राणी को दिल करुणा से भर जावे।
तन मन धन से करूँ मैं सेवा ऐसी वृत्ति हो जावे॥

अहंकार व्रत जप और तप का कभी न व्यापे इस मन में ।
कभी न फूलूँ सुख में दाता आखें बन्द न हो धन में ॥
अपना सा दिल जान सभी का कभी नहीं अपमान करूँ ।
होकर नम्र करूँ मैं वन्दन सबका ही सन्मान करूँ ॥
गीता रामायण हो घर घर सबजन हरि गुण गान करें ।
वृद्ध पिता माता गुरु जनहित प्राणों तक बलिदान करें ॥
भूलूं नहीं तुम्हें कष्टों में समचित हो तुंमको ध्याऊँ ।
जीवन सरस बने हे भगवन् हरदम तेरे गुण गाऊँ ॥
गुरु चरणों में आकर जिसने ऐसा भाव बनाया है ।
कहे "नारायण" उसके लिये वैकुंठ यहां चल आया है ॥

—:०:❋:०:—

भजन—४५

अब तो दया प्रभु करनी पड़ेगी ।
प्रीत लगी वो निभानी पड़ेगी ॥टेक॥
तुझसा दयालु न कोई है भगवन् ।
तेरी शरण में आया है ये जन ।
द्विविधा सारी मिटानी पड़ेगी ॥१॥

अहंकारी मन झुका दो हे दाता।
विकारों की जड़ को मिटादो हे दाता।
द्वैत की भीत गिरानी पड़ेगी ॥२॥
मन मन्दिर को उज्ज्वल कर दो।
सद्गुण से प्रभु झोली भर दो।
सोई वृत्ति जगानी पड़ेगी ॥३॥
स्वामी चेतन गुरु हैं दयासागर।
नारायण तुम भर दो ये गागर।
नैया पार लगानी पड़ेगी ॥४॥टेक॥

—:०:०:*:०:०:—

भजन—४६

अब तो ऐसी दया कर दे स्वामी।
नाम जपूं और मिल जाय नामी ॥टेक॥
छोड़ जगत के सगले नाते।
जो अपने कुछ काम न आते।
उनके लिए न बनूं मैं सकामी ॥१॥टेक॥

नाम जपूं तेरा ध्यान धरूं मैं।
फल आशा तज कर्म करूं मैं।
मन हो आत्म आरामी ॥२॥टेक॥
संसार का रंग चढ़ने न पावे।
श्रेय पथ से मन गिरने न पावे।
जीवन हो सत्य अनुगामी ॥३॥
तेरी दया बिन कुछ भी ना पाऊँ।
तुझे छोड़ बिनती किसको सुनाऊँ।
"नारायण" तुझको नामामि नमामि ॥४॥

### भजन—४७

जीवन में जी भर देख लिया, दुनियां का झूठ पसारा है।
स्वार्थ बिन कोई बात करे ना, चारों ओर निहारा है।।टेक
संभल संभल कर चल राही, ना होगी तेरी मन चाही।
ना साथी है न सगा कोई, एक साथी राम तुम्हारा है ॥१
ये दुनियां बड़ी दुरंगी है, क्षण-क्षण में रंग बदलती है।
एक रंग रहे एक संग रहे, एक आतम देव पियारा है ॥२

मान-तान सब तन का है, न इसकी मन कुछ चाह करो।
प्रभु-प्रीत चढ़ी उनकी जगमें, जिन सबसे किया किनारा है॥३

कहे 'नारायण' सतगुरु बिन, नहीं जग में और सहारा है।
कुछ गुजर गई कुछ गुजरजाय, गुरु-चरणों मांहि गुजारा है॥४

—:❀:—

भजन—४८

मेरा जीवन मधुर बनाओ सतगुरु जीवन मधुर बनाओ ।टे०
१-जो तेरे मन को भाये प्रभु मेरी, ऐसी करनी बनाओ।
वचन प्रभु मैं तेरे कमाऊँ, ऐसी रहनी बनाओ ॥टे०॥
२-पराये दोष न देखूं कभी मैं, दिल को इतना पवित्र बनादो।
अपने अवगुण ढूंढ भगाऊँ, ऐसी दया बरसाओ ॥टे०
३-तेरी कृपा से ही जीवन में, सद्गुण प्रभुजी आते हैं।
मम प्रयत्न और तेरी कृपा का, सुन्दर मेल कराओ ॥टे०
४-इस मन-मंदिर को प्रभु ऐसे, पावन भावों से सजाओ।
खुद ही आके ऐसे बसो प्रभु, जाना ना कभी चाहो ।टे०

५-मुझसे तुझको लाखों हैं पर, मेरा तो एक तू ही है।
जीवनधन 'श्री नारायण' प्रभु, कृपा कर अपनाओ ।।टे०
मेरा जीवन मधुर बनाओ सतगुरु जीवन मधुर बनाओ ।।

—::०::—

भजन—४९

तर्ज—संत परम हितकारी

जिंदगी बीती जात, भजन बिन, जिंदगी बीती जात ।टे०
प्रभु की शरण गहे बिन भोले, नहीं तेरी कुशलात ।।१।।
लाखों जतन करे सुख पाने को, फिर भी न शांति पात । २टे०
मेरा-मेरा कर कर रोता, जरत रहे दिन रात ।।३टे०
औरों को दुख देकर मानव, करता खुद का घात ।।४टे०
हर पल भज 'श्री नारायण' को, सांची येही बात ।।५टे०

—:❀:—

भजन—५०

है धन्य घड़ी धन भाग बहना आई आंगन में।
घर के सब सुखों को त्याग बहना आई आंगन में ।।टे०।।

१ स्वागत में हम पलक बिछावें,
आनंद के गीत गावें।
आज पुण्य गये सब जाग ।।...टे०

२ दूर - दूर से चलकर आई,
सत्संग की शोभा बढ़ाई।
लेने गुरु से आत्मराज ॥...टे०

३ प्रेम - भाव की जो पहुनाई,
स्वीकारो हे बहनो भाई।
सेवा में अर्पित फल फूल साग ॥...टे०

४ गुरु चरणों में ज्ञान की गंगा,
मज्जन कर मन हो चंगा।
धोने मन का द्वैत दाग ॥...टे०

५ राम मिलावे गुरु की पूजा,
गुरु बिन जग में देव न दूजा।
लेकर गुरु पद का अनुराग ॥...टे०

६ नारायण प्रभु वचन सुनावें,
भूलों को राह दिखावें।
छोड़ जग का द्वेष-राग ॥...टे०

—:*:—

## भजन—५१

विनय सुनो मेरे गुरु ज्ञानी, निर्मल कोमल गुणखानी ॥

१ तेरे चरणों में सुख से रहूँ,
चैन न तुझ बिन साँची कहूँ।
तुझ बिन सब जग है फानी ॥···टे०

२ सब कुछ लुट जाय शोक नहीं,
सब कुछ मिल जाय हर्ष नहीं।
तू ही सब कुछ है स्वामी ॥···टे०

३ जो अपने मन की माने,
विरह व्यथा वो क्या जाने।
गुरु बिन कैसी जिन्दगी ॥···टे०

४ परम प्रभु मेरे नारायण,
तुझको पाकर जीवन धन।
मिट गयी मन की हैरानी ॥···टे०